2

यूसुफ के पास घोषणा और कुंवारी से जन्म

(1:18-25)

यीशु के माता-पिता की प्रसिद्ध कहानी 1:18-25 में बताई गई है। हम यीशु के होने वाले जन्म की यूसुफ के पास, मरियम के परिवार के पास और विशेषकर स्वयं मरियम के पास घोषणा पर होने वाले आश्चर्य की कल्पना ही कर सकते हैं।

इस विवरण में ज़ोर दिया गया है कि यीशु भविष्यवाणी का पूरा होना था; परमेश्वर की युगों से बनाई गई योजना अन्त में पूरी हो गई थी। इसमें इस तथ्य को प्रकाशमान किया गया है कि यीशु कोई साधारण मनुष्य नहीं था; उसका गर्भ में आना पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ। वास्तव में वह देह में परमेश्वर था। वचन उसके सांसारिक माता-पिता के धर्मी व्यवहार की ओर ध्यान दिलाता है; उस ढंग में जिसके द्वारा यीशु ने संसार में प्रवेश किया, कोई चालबाजी नहीं।

धर्म संकट - ''गर्भवती पाई गई'' (1:18)

[18]यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, जब उस की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उन के इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई।

आयत 18. 1:18 में अनुवादित **गर्भवती** का यूनानी शब्द (*genesis*) 1:1 से दोहराया गया है जहां इसे ''वंशावली'' लिखा गया है। पहला हवाला मसीहा की मानवीय वंशावली के आरम्भ को ठहराता है, जबकि दूसरा हवाला संसार में **यीशु मसीह** के आने की एक निकट दृष्टि देता है।

उसकी माता मरियम[1] की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, प्राचीन यहूदी संसार में, मंगनी आधुनिक पश्चिमी सगाई से अधिक पक्की होती थी (व्यवस्थाविवरण 20:7)।[2] मंगनी किए हुए दम्पत्ति को आवश्यक रूप में विवाहित ही माना जाता था परन्तु वे इकट्ठे नहीं रहते थे। यूसुफ और मरियम के मामले में उन्हें ''पति'' (1:19) और ''पत्नी'' (1:20)[3] कहा गया। यदि मंगनी किया हुआ पुरुष विवाह से पहले इस सम्बन्ध को तोड़ना चाहे तो उसे स्त्री के हाथों में ''तलाकनामा'' वैसे ही देना आवश्यक था जैसे उनका विवाह हो चुका हो (व्यवस्थाविवरण 24:1-4; मरकुस 10:4)।[4] यह तलाकनामा कम से कम दो गवाहों के हस्ताक्षर के साथ होना आवश्यक था या पति से पत्नी तक पहुंचने में तलाकनामे पर कम से कम दो गवाह होने आवश्यक थे।[5] इस कार्यवाही के लिए किसी जज या अदालत की आवश्यकता नहीं होती थी। मिशनाह के अनुसार, तलाकनामे में लिखा होता था, ''देखो, तुम्हें किसी भी पुरुष से [विवाह] करने की अनुमति है।''[6] यदि मंगनी किए हुए लड़के या लड़की में से विवाह से पहले कोई मर

जाए, तो बच जाने वाले साथी को विधवा या विधुर हो गया माना जाता था। मंगनी कुछ महीनों से लेकर एक साल तक की जाती थी, जिसके बाद दूल्हा अपनी दुल्हन को लेने और उसे वहां रखने के लिए जहां उनका विवाह होगा और अपना घर बनाएंगे, बारात लेकर आता है (देखें 22:1-14; 25:1-13)।

उनके इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। सुसमाचार का लूका का विवरण मरियम के पास स्वर्गदूत की घोषणा और इलीशिबा के साथ उसके तीन महीने रहने का विस्तार से विवरण देता है (लूका 1:26-56)। इस समय के बाद वह घर लौट गई और स्पष्टतया उसके गर्भवती होने के निशान दिखाई देने लगे। यूसुफ का मरियम के साथ कोई वैवाहिक सम्बन्ध नहीं था, जिस कारण उसे लगा कि वह बेवफ़ा निकली थी। व्यवस्था के अनुसार दोनों में से किसी के भी बेवफ़ा होने को व्यभिचार माना जाता था और दोषी व्यक्ति को पथराव करके मारा डाला जा सकता था (व्यवस्थाविवरण 22:23, 24)।

आशीष-वह पुत्र उद्धारकर्त्ता होगा (1:19-21)

[19]सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने का विचार किया। [20]जब वह इन बातों की सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा, हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां लाने से मत डर, क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। [21]वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।

आयत 19. मरियम के **पति यूसुफ** को जब पता चला कि वह गर्भवती है और उसने जाना कि वह बच्चे का पिता नहीं है तो उसके लिए निर्णय लेना कठिन हो गया। वह **धर्मी था** जो परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का इच्छुक था। परन्तु मरियम **को बदनाम नहीं करना चाहता था** या उसे पथराव किए जाने का इच्छुक नहीं था, उसने **उसे चुपके से त्याग देने का विचार किया**। इस संदर्भ में क्रिया शब्द ''त्याग देने'' (*apoluō*) का अर्थ ''तलाक'' है। डोनल्ड ए. हैग्नर ने लिखा है, ''यूसुफ मरियम को व्यभिचारिणी नहीं दिखाना चाहता था, तो भी न तो उसने उससे विवाह भी नहीं करना था, जो स्पष्ट रूप में पाप की दोषी थी।''[7]

इस पर भी सवाल है कि यूसुफ के पास पथराव का विकल्प था या नहीं। रॉबर्ट एच. गुंड्री ने ध्यान दिलाया है, ''रब्बियों के कुछ प्रमाण से ठहराए गए पथराव से राहत का सुझाव मिलता है ... , और मत्ती में यहां पर अपराधी पुरुष अनुपस्थित था।''[8] व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री पर टिप्पणी करते हुए (यूहन्ना 7:53-8:11)। डी. ए. कार्सन ने समझाया है कि पहली सदी में यहूदियों के पास ''मृत्यु दण्ड देने के ... विशेष अधिकार'' थे।[9] परन्तु मसीह के जन्म के कुछ समय के *बाद* रोमियों ने यहूदियों से यह शक्ति ली थी[10] (10:18; 12:14 पर टिप्पणियां देखें)।

यूसुफ ने अपनी दुल्हन को किसी भी प्रकार के सार्वजनिक रूप में अपमानित करने की छूट देते हुए उस पर रहम करने का मन बना लिया था। डग्लस आर. ए. हेयर ने लिखा है कि ''उसने सम्बन्ध को तोड़ने का निश्चय क्रोध के कारण नहीं, बल्कि गहरी धार्मिक आस्था के

कारण लिया।''[11] उसने यह भी लिखा, ''यूसुफ मत्ती को प्रिय सिद्धांत के अनुसार रहता था कि 'मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूं,' (होशे 6:6, 9:13 और 12:7 दोनों जगह उद्धृत)।''[12]

आयत 20. यूसुफ द्वारा निर्णय ले लेने के बाद, उसने **स्वप्न** देखा जिसमें **प्रभु के स्वर्गदूत ने उसे** दिखाई देकर कहा, **''हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां लाने से मत डर।''** जिस कारण मरियम को चुपके से तलाक देने का विचार उसने बदल लिया। ''यूसुफ के पास अपने निर्दोष होने के मरिमय के दावे बिना शक अब सच लग रहे थे।''[13]

यूसुफ के स्वप्न जन्म के विवरण में पिरोए हुए थे (1:20; 2:12, 13, 19, 22)। रॉबर्ट एच. माउंस ने कहा है, ''देखा गया है कि कई मामलों में यूसुफ अपने पुराने नियम वाले समनाम [याकूब के पुत्र यूसुफ] से मिलता जुलता है जो स्वप्नों से प्रभावित एक धर्मी पुरुष था और उसे मिस्र में जाने को विवश किया गया था।''[14] बेन विदरिंग्टन तृतीय की टिप्पणी है:

> [मत्ती] मरियम के जीवन में ईश्वरीय हस्तक्षेप पर यूसुफ की प्रतिक्रिया पर ध्यान दिलाता है और विशेषकर दिखाता है कि किस प्रकार यूसुफ को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए बार-बार स्वप्न मिलते हैं। यह कोई संयोग की बात नहीं है कि यीशु के अलावा इन कहानियों में केवल यूसुफ को ''दाऊद का पुत्र'' कहा गया है। उसे प्रतिनिधिक पुरखे के रूप में देखा जाता है जो परमेश्वर के निर्देश के अनुसार मरियम और यीशु की अगुआई करके उनकी रक्षा करता है।[15]

''दाऊद की सन्तान'' शीर्षक फिर से ज़ोर देता है कि यूसुफ जो यीशु का दत्तकी पिता बना राजा दाऊद की वंशावली में से था-वह तथ्य जो वंशावली में पहले ही बताया गया (1:1, 6, 16)।

मरियम के पास घोषणा के मामले में, संदेश देने वाले स्वर्गदूत का नाम जिब्राइल बताया गया था (लूका 1:26)। यूसुफ के मामले में स्वर्गदूत का नाम नहीं बताया गया। स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया कि जो मरियम के **गर्भ** में था वह **पवित्र आत्मा की ओर से** था। आश्चर्यकर्म के द्वारा इस गर्भाधारण का मत्ती का ढंग संयमित भी था और आदर प्रगट करने वाला भी (1:18, 20)। हैग्नर ने टिप्पणी की, ''हमें किसी देवता के किसी देवी के साथ शारीरिक सम्बन्ध होने की काफ़िर धारणा [यूनानी मिथ्य में आम बात] नहीं बल्कि अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मरियम में परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति की बात मिलती है।''[16] पवित्र आत्मा ने पवित्र बीज के साथ मरियम की कोख में एक अण्डे से उसकी गोद भर दी ताकि उस मिलन से मनुष्य और ईश्वर दोनों का फल मिले (लूका 1:31-35)। मरियम की कोख में बना बच्चा, मानवीय देह में लिपटा, ''परमेश्वर का वचन'' था (यूहन्ना 1:1, 14)। रब्बियों के विचार को संक्षिप्त करते हुए, डेविड हिल ने लिखा है, ''जिस प्रकार से संसार की नींव के समय परमेश्वर का आत्मा सक्रिय था, वैसे ही आत्मा से इसके नया बनने में सक्रिय होने की अपेक्षा थी।''[17] उसने और कहा, ''मत्ती संकेत देता है कि परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति और गतिविधि ('पवित्र आत्मा') छुड़ाने वाले मसीहा के गर्भ में आने के द्वारा नई सृष्टि का शुभ आरम्भ कर रही है।''[18]

आयत 21. स्वर्गदूत ने यूसुफ को और बताया कि मरियम की कोख में बच्चा **पुत्र** था जिसका **नाम यीशु** होना था, **क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।**

''यीशु'' (*Iēsous*) इब्रानी नाम ''यहोशू'' (*Yᵉhoshuaʿ*) का यूनानी रूप है जिसका अर्थ है ''याहवेह उद्धार है।'' यह आम यहूदी नाम (प्रेरितों 13:6; कुलुस्सियों 4:11) चुना गया था क्योंकि इससे उस उद्देश्य का पता चलता था जिसके लिए परमेश्वर का पुत्र संसार में आ रहा था। वह उद्देश्य ''अपने लोगों को उनके पापों से बचाना'' था (देखें यशायाह 53:5, 6; यिर्मयाह 31:31–34; मत्ती 20:28; 26:26–28; गलातियों 4:4, 5; 1 तीमुथियुस 1:15)।

अपोक्रिफा (बाइबल की अप्रामाणिक पुस्तकें) से एक वचन भी नाम के अर्थ पर खेलती है:

> नून का पुत्र *योशुआ* शूरवीर योद्धा था,
> और भविष्यवक्ता के रूप में मूसा का उत्तराधिकारी।
> वह *अपने नाम के अनुरूप,* प्रभु के चुने हुए लोगों का महान उद्धारक *बना,*
> उसने इस्राएल को उसकी विरासत दिलाने के लिए
> आक्रामक शत्रुओं को दण्ड दिया।[19]

पहला यहोशू जहां एक सैनिक उद्धारकर्त्ता के रूप में आया, दूसरा यहोशू (यीशु) एक आत्मिक उद्धारकर्त्ता के रूप में आया। वह किसी राष्ट्रीय उद्देश्य अर्थात रोमी दमन से यहूदियों को निकालने या पृथ्वी पर कोई सांसारिक राज्य स्थापित करने के लिए नहीं आया। इसके बजाय वह मनुष्य जाति को पाप के दोष और परिणामों से छुड़ाने के लिए आया (देखें रोमियों 3:23, 24; 6:23)। लिय्योन मौरिस ने व्याख्या की है कि ''वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा'' कथन में व्यक्तिवाचक सर्वनाम ''वह'' (*autos*) ज़ोरदार है, जिसका अर्थ है ''वही और दूसरा कोई नहीं।''[20]

यीशु चाहे पहले ''अपनों के पास आया'' (यहूदी जाति), परन्तु सारी मनुष्यजाति के उद्धार के लिए आया (यूहन्ना 3:16–21)। यहूदियों के अधिकतर भाग ने उसे नकार दिया (यूहन्ना 1:11), परन्तु अन्यजातियों का भी उसके राज्य में स्वागत किया गया। ''परन्तु लोगों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं'' (यूहन्ना 1:12)। इसका अर्थ यह नहीं है कि विश्वास करने वाले लोग ''परमेश्वर की सन्तान'' हैं बल्कि यह है कि जो लोग विश्वास करते हैं उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया गया है। जन्म लेने वाला हर व्यक्ति मरेगा (इब्रानियों 9:27), परन्तु केवल यीशु है जो विशेषकर मरने के लिए ही जन्मा था वह हमारे पापों के लिए सिद्ध बलिदान बनने आया (इब्रानियों 9:26–28; 10:5–10; 1 यूहन्ना 2:2; 4:10)।

भविष्यवाणी-कुंवारी से जन्म (1:22, 23)

[22]यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो। [23]कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है ''परमेश्वर हमारे साथ।''

आयत 22. इस आयत में उन हवालों में से पहले बहुत हैं जो यह ज़ोर देते हैं कि यीशु ने पुराने नियम की भविष्यवाणियों को **पूरा** [किया] (1:22; 2:15, 17, 23; 4:14; 8:17;

12:17; 13:35; 21:4; 26:56; 27:9)। पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने कहा था, ''यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं'' (5:17)। **यह सब** इस भाग में वर्णित आश्चर्यकर्म से गर्भवती होने और मसीह के कुंवारी से जन्म की बात की है (1:18-25)। मत्ती ने स्पष्ट रूप से कहा कि **भविष्यवक्ता के द्वारा प्रभु** ने ही बात की थी, जबकि अन्य अवसरों पर केवल भविष्यवक्ता का उल्लेख है और ईश्वरीय प्रेरणा के होने की बात की कल्पना की जाती है। इस मामले में अनाम भविष्यवक्ता यशायाह ही है।

आयत 23. यह भविष्यवाणी यशायाह 7:14 से उद्धृत की गई है: ''**सुनो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी**।'' मत्ती ने सप्तति अनुवाद का अनुसरण किया है, जहां यूनानी शब्द (*parthenos*) जिसका अर्थ ''कुंवारी'' है इब्रानी शब्द (*´almah*) के स्थान पर है। पुराने नियम में *´almah* का अर्थ आम तौर पर अविवाहित ''कुमारी,'' या ''कुंवारी'' होता है (देखें उत्पत्ति 24:43; श्रेष्ठगीत 1:3; 6:8)। अन्य तीन समयों पर इसका अर्थ एक युवती अर्थात अविवाहित लड़की है (देखें निर्गमन 2:8; भजन संहिता 68:25; नीतिवचन 30:19)। प्रमाण का वजन इस स्थिति के पक्ष में है कि *´almah* का इस्तेमाल पुराने नियम में कहीं भी विवाहित स्त्री के लिए नहीं किया गया।

यशायाह 7:14 के अनुवाद से बढ़कर, इस आयत पर कई और सवाल खड़े होते हैं। क्या भविष्यवाणी केवल मसीह के कुंवारी से जन्म की है या कोई दोहरी भविष्यवाणी का पूरा होना है? यशायाह में दी गई भविष्यवाणी मूल पाठकों में कैसे की गई होगी? मत्ती ने इस भविष्यवाणी का कैसे इस्तेमाल किया।

लगभग 735 ई.पू. में, यशायाह द्वारा दुष्ट राजा अहाज को यह यकीन दिलाने के लिए भविष्यवाणी दी गई कि परमेश्वर अराम (सीरिया) के राजा रसीन और इस्राएल के राजा पेकह (यशायाह 7:1) दोनों को दाऊद के शाही परिवार को नष्ट करने की अनुमति नहीं देगा (यशायाह 7:6)। परमेश्वर ने अपने लोगों के ऊपर छीनकर इन काफिर राजाओं को अपने राजवंश को स्थापित करने के उनके षड्यन्त्र को पूरा होने से रोकना था (देखें उत्पत्ति 49:10; 2 शमूएल 7:12, 13)। अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए प्रभु ने भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा अहाज को एक चिह्न दिया:

> इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी। और जब तक वह बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना न जाने तब तक वह मक्खन और मधु खाएगा। *क्योंकि उस से पहिले कि वह लड़का बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने, वह देश जिसके दोनों राजाओं से तू घबरा रहा है निर्जन हो जाएगा* (यशायाह 7:14-16)।

अहाज को चिह्न देने के लिए इस भविष्यवाणी के आरम्भ में बताए गए पुत्र ने समय के थोड़े काल में जन्म लेना था। कुछ सालों बाद अश्शूरी लोग इस्राएल (733 ई.पू.) और आराम (732 ई.पू.) में आए और कई लोगों को बन्दी बनाकर ले गए; पेकह और रसीन को मार डाला गया (2 राजाओं 15:29, 30; 16:9)। 722 ई.पू. में अन्त में अश्शूरियों द्वारा इस्राएल को बेकार

कर दिया गया। इस पुत्र का जन्म इस्राएल और अराम के विरुद्ध प्रभु की प्रतिज्ञा के अनुसार अश्शूरियों के आने से पहले हुआ।

अहाज के लिए चिह्न यह था कि यह बताया गया जन्म समय का केवल एक नाप था। बच्चे का जन्म होने और सही गलत की पहचान करने की उम्र तक पहुंचने का समय इन राजाओं के दृश्य में से हटने से पहले आना था। अहाज ने भविष्यवाणी के कुंआरी के गर्भवती होने वाले भाग को नहीं समझना था। उसने केवल इसके समय के चिह्न को समझना था। इन दो राजाओं के बीत जाने के बाद यशायाह ने अहाज को चेतावनी दी कि वह तिग्लित्पलेसेर के साथ संघ न बनाए।

मत्ती ने कहा कि यह भविष्यवाणी यीशु के कुंआरी के जन्म से पूरी हुई (1:23)। उसी की पुष्टि भविष्यवाणी के दोहरे होने को दिखाती है। इसकी प्रासंगिकता *उस समय* के लिए थी, क्योंकि अहाज के अश्शूरियों को ओर से मिलने वाली राहत लेनी थी; और इसकी प्रासंगिकता *एक और समय* अर्थात मसीह के कुंवारी से जन्म के लिए भी थी। भविष्यवाणी का कुंआरी से जन्म वाला भाग यीशु के जन्म के साथ पूरा होना था। अहाज भविष्यवाणी के इस भाग को नहीं समझ पाया होगा। शायद हम भी न समझ पाते यदि मत्ती हमारा ध्यान इस ओर न लगाता।

मत्ती ने यह दिखाने के लिए कि यीशु मसीहा अर्थात दाऊद की सन्तान के रूप में आया, यशायाह 7:14 की भविष्यवाणी को उद्धृत किया। वह दाऊद के साथ उसके राजवंश के विषय में की गई प्रतिज्ञाओं को सदा के लिए एक ही बार पूरी करने के लिए आया (2 शमूएल 7:12, 13)। इसके अलावा यीशु आश्चर्यकर्म से गर्भ में आया और मरियम से जन्मा जबकि *अभी* वह कुंवारी थी। परमेश्वर ने केवल एक वास्तविक कुंवारी से जन्म का इस्तेमाल किया है और वह मरियम के द्वारा यीशु का जन्म है।[21]

''इम्मानुएल'' नाम **जिसका अर्थ है ''परमेश्वर हमारे साथ,''** अन्त में देहधारण करने में यीशु द्वारा पूरा किया जाता है (देखें यशायाह 9:6, 7)। पुराने नियम में ''परमेश्वर हमारे साथ'' अभिव्यक्ति का इस्तेमाल परमेश्वर के अपने लोगों के जीवनों में काम करने और उपस्थित होने के लिए किया जाता था। नये नियम में इसका अर्थ अपने लोगों के बीच में परमेश्वर की सजीव उपस्थिति है। ''वचन'' न केवल ''परमेश्वर के साथ'' था बल्कि वह ''परमेश्वर [भी] था'' (यूहन्ना 1:1)। ''और वचन देहधारी हुआ; और हमारे बीच में डेरा किया'' (यूहन्ना 1:14)। माउंस का अवलोकन है, ''यह उपयुक्त है कि [मत्ती का] सुसमाचार 'इम्मानुएल' की प्रतिज्ञा कि 'देखो मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं' (मत्ती 28:20) से समाप्त होता है।''[22]

प्रतीक्षा का काल-विश्वास का समय (1:24, 25)

[24]सो यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया। [25]और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया, और उसने उसका नाम यीशु रखा।

आयत 24. जब यूसुफ स्वप्न से जागा तो वह जो कुछ उसे बताया गया था उसकी सच्चाई से कायल हो गया था और तुरन्त उसने **मरियम अपनी पत्नी को** लाने की स्वर्गदूत की आज्ञा का पालन किया। यूसुफ ''परमेश्वर की इच्छा को मानने के लिए अपने पहलौठे पुत्र का पिता

बनने के अधिकार को जिसे यहूदी पिता के लिए सबस बड़ा सौभाग्य माना जाता था, त्याग देने को तैयार'' था।[23]

हमारे पास यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि इलीशिबा (और हम कल्पना कर सकते हैं कि उसके जकर्याह) के अलावा और कितने लोगों को मरियम के गर्भवती होने का पता था। मरियम को कुंवारी से जन्म की घोषणा करने के समय जिब्राइल स्वर्गदूत ने उसे बताया था कि उसकी ''कुटुम्बिनी'' इलीशिबा भी अपने पुत्र यूहन्ना के साथ छह महीने से पेट से है (लूका 1:36)। वचन संकेत देता है कि मरियम प्रभु की घोषणा के तुरन्त बाद पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती हो गई और वह ''उन दिनों में'' (लकूा 1:39) इलीशिबा से मिलने गई। उसकी रिश्ते की बहन को तब पता चला कि मरियम गर्भवती है (लूका 1:42, 43)। मरियम इलीशिबा के साथ ''लगभग तीन महीने'' (लूका 1:56), जिसका अर्थ है कि अपने घर लौटने तक, उसका पेट दिखने लगा होगा। इसका संकेत कि यूसुफ उसे स्वप्न में स्वर्गदूत के दर्शन के तुरन्त बाद अपनी पत्नी के रूप में ले आया, इस कारण कुछ और लोगों को भी उसकी स्थिति का पता हो सकता है।[24]

आयत 25. और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक [यूसुफ] **उसके पास न गया।** NASB का अनुवाद है, ''परन्तु [यूसुफ ने] उसे कुंआरी रखा, जब तक वह पुत्र न जनी।'' (अनुवादक) यह बात इस तथ्य को रेखांकित करती है कि यह सचमुच कुंआरी का गर्भधारण करना और जन्म देना था। यूनानी धर्मशास्त्र में मूलतया ''[उसने] उसे कुंवारी रखा'' की जगह ''उसने उसे नहीं जाना'' है (देखें NKJV)। यूनानी शब्द (*ginōskō*) का अनुवाद ''जाना'' इब्रानी समान शब्द (*yada'*) के साथ दोनों का इस्तेमाल शारीरिक सम्बन्धों के लिए कोमल शब्द के रूप में किया जाता है (देखें उत्पत्ति 4:1, 17, 25; लूका 1:34; KJV). कुछ यूनानी हस्तलिपियों में ''पुत्र'' में सुधार करते हुए विशेष तौर पर ''पहलौठा'' (देखें KJV) है, जो शायद लूका 2:7 के ''वह अपना पहलौठा पुत्र जनी ...'' शब्दों से लिया गया है।

निष्पाप गर्भधारण की शिक्षा ऊपर से देखें तो भ्रमित करने वाली है। इस शब्द का इस्तेमाल यीशु के लिए कदापि नहीं है, बल्कि यह मरियम के लिए है।[25] इसमें यह विचार मिलता है कि वह ईश्वर था और आराधना के योग्य है। बाइबल यह शिक्षा नहीं देती; इसके विपरीत वास्तव में यह उसके मनुष्य होने पर ज़ोर देती है (12:46-50; 13:55; लूका 2:48-51; यूहन्ना 2:3, 4; 19:25-27)। गर्भधारण की बात एक और शिक्षा के साथ जुड़ी है जो मरियम के बाद में भी कुंवारी रहने का दावा करती है। परन्तु मत्ती की बात का अर्थ केवल यह कहना है कि मसीह के जन्म ''तक'' (1:25) या उससे बाद वह और यूसुफ शारीरिक सम्बन्धों से दूर रहे। उसके बाद वचन संकेत देता है कि उनमें सामान्य शारीरिक सम्बन्ध हो गए थे। यह स्पष्ट है कि मरियम के और बच्चे थे, और यह स्पष्ट है कि वे सामान्य ढंग से यूसुफ से गर्भ में आए थे (12:46; 13:55, 56)।

यीशु के जन्म के बाद मरियम के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाकर यूसुफ़ ने उस प्रकट की गई सच्चाई में अपने विश्वास को दिखाया कि मरियम का पुत्र परमेश्वर का पुत्र है। इससे यह कहकर कि मरियम एक बदचलन स्त्री थी और यीशु अवैध सम्बन्धों की सन्तान था, परमेश्वर की निन्दा करने वालों का मुंह सदा के लिए बन्द हो जाना चाहिए।

यूसुफ न केवल मरियम को अपनी पत्नी होने के लिए ले आया बल्कि उसने स्वर्गदूत के निर्देशों का पालन करते हुए **उसका नाम यीशु रखा** (1:21)। ऐसा करके उसने यीशु को ''यूसुफ का पुत्र'' होने का कानूनी अधिकार दे दिया (1:16; 13:55; यूहन्ना 6:42)। यह नाम दिया जाना यीशु के आठ दिन का होने पर, उसका खतना किए जाने के समय हुआ (लूका 2:21)। नाम ''यीशु'' आरम्भिक और अन्तिम आयतों में आकर इस भाग को सजा देता है (1:18, 25)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

एक अनचाहा बच्चा (1:18-25)

कई साल पहले छोटे से एक अनोखे गांव में एक बच्चे का जन्म हुआ था। उसे एक ऐसी मां ने जन्म दिया, जो बिना विवाह के गर्भवती हुई थी। उस समाज में इसका परिणाम मृत्यु दण्ड हो सकता था। उसका मंगेतर जो उसकी हालत के बावजूद उससे प्रेम करता था, उसने योजना बनाकर उससे विवाह कर लिया। आज कुछ लोग इस युवती को बिना योजना के गर्भवती होकर अपमानित और परेशानी में न पड़ने की सलाह देंगे। उन्होंने इसे गुप्त रखने की सलाह दी होगी, यहां तक कि बच्चे के पिता से भी गर्भ गिराने के लिए कहा होगा। किसी को भी पता नहीं चलना था। इस कहानी में युवती, यदि आपने अभी अनुमान नहीं लगाया है तो वह मरियम, यीशु की माता थी।

गर्भपात पुराने समय से होता आया है। मरियम के समय में भी होता होगा। यदि वह अपने बच्चे को गिराना चुन लेती तो क्या होता? यदि यीशु पैदा ही न होता तो क्या होता? क्या वह मरियम की कोख में किसी भी प्रकार से परमेश्वर के पुत्र और संसार के उद्धारकर्त्ता से कम था? बेशक नहीं। मरियम को मालूम था कि यीशु कौन है (देखें 1:20-23; लूका 1:26-38), और उसने कभी भी अपने बच्चे को गिराना नहीं था; पर मान लें कि यदि वह गिरा देती। जितनी निराशाजनक स्थिति संसार की आज है, उसके बिना इससे कहीं अधिक आशाहीन और असहाय होती। हर रोज हज़ारों निर्दोष मानवीय जीव मार डाले जाते हैं। इनमें से कितने ही बच्चे बड़े होकर संसार को आशीषित कर सकते थे पर उन्हें कभी अवसर नहीं मिलेगा?

अवांछित बच्चे कोई नई बात नहीं है। जब यीशु का जन्म हुआ, तो सिवाय उसके माता पिता और शायद कुछ और लोगों के अलावा दूसरों के लिए वह अवांछित ही था।

हेरोदेस महान उसे नहीं चाहता था। वह अपनी गद्दी पर कब्जा कर लेने की कोशिश कर लेने वाले से डरता था। जब इस सनकी हाकिम ने जो अपने प्रचण्ड कहर के दौरों और खूनी हमलों के कारण प्रसिद्ध था, इस बच्चे के जन्म की बात सुनी जो ''यहूदियों का राजा'' होने के लिए जन्मा था, तो उसने उसे मार डालना चाहा (2:7-18)।

बड़ा होने पर, अपनी सेवकाई के आरम्भ में *यीशु के अपने घर के कई लोगों ने उसे स्वीकार नहीं किया* (यूहन्ना 7:5)। उसके जी उठने के बाद तक उसका कोई भाई विश्वास नहीं करता था (यूहन्ना 7:5; प्रेरितों 1:14; 1 कुरिन्थियों 15:7)।

यहूदी धार्मिक संगठन उसे नहीं चाहते थे। यूहन्ना ने लिखा, ''वह अपने घर आया और

उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया'' (यूहन्ना 1:11; देखें यशायाह 53:3-9)।

हमें मानवीय जीवन को परमेश्वर के दान के रूप में सराहना चाहिए। इसका पता बच्चों के साथ हमारे व्यवहार से चलना चाहिए, चाहे वे कोख के अन्दर हों या बाहर। हमें गर्भपात अर्थात निर्दोष और बेजुबान अजन्मे बच्चों के विनाश के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े होना चाहिए। इसके अलावा हमें उन बच्चों के प्रति करुणा दिखानी चाहिए जिनकी उपेक्षा की गई है या जिनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है।

कुंवारी से जन्म (1:18-25)

आश्चर्यकर्म से गर्भ में आने और कुंआरी से यीशु के जन्म की बातें मसीही विश्वास का महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। इन घटनाओं से सम्बन्धित पांच महत्वपूर्ण अवलोकनों पर हमें ध्यान देना चाहिए। (उन्हें केवल ''कुंवारी से जन्म'' के रूप में कहा जाए।)

कुंवारी से जन्म एक ईश्वरीय कार्य था। संसार में यीशु का आना परमेश्वर के अनुग्रह और पहल का प्रमाण था (यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8-10)। मनुष्य अपने उद्धार के लिए स्वयं कुछ नहीं कर सकता। यीशु का आना बच्चों के होने या मानवीय प्रजनन की स्वाभाविक प्रक्रिया या किसी दम्पत्ति की इच्छा के कारण नहीं था, बल्कि यह पवित्र आत्मा के द्वारा पूरा किया गया परमेश्वर की ओर से एक आश्चर्यकर्म था (1:18, 20; लूका 1:35), अर्थात हमारी मानवीय आवश्यकता के लिए ईश्वरीय कार्य।

कुंवारी से जन्म भविष्यवाणी का पूरा होना था। संसार में यीशु का प्रवेश अन्ततः यशायाह की भविष्यवाणी का पूरा होना था: ''देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है परमेश्वर हमारे साथ'' (1:23)। मसीह के आने के द्वारा परमेश्वर ने दाऊद की गद्दी पर उसकी सन्तान को सुरक्षित रखने की प्रतिज्ञा पूरी की (2 शमूएल 7:12, 13; प्रेरितों 2:29-36)।

कुंवारी से जन्म यीशु के पूर्व अस्तित्व का वर्णन है। नया नियम मसीह के पूर्व अस्तित्व की बात बताता है। यूहन्ना 1:1 कहता है ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।'' यह तथ्य कि यीशु आश्चर्यकर्म के द्वारा इस संसार में आया, उसके आरम्भ से होने के तथ्य के साथ उलझ जाता है।

कुंवारी से जन्म से पता चलता है कि यीशु किस प्रकार पूर्णतया परमेश्वर और पूर्णतया मनुष्य बना। यूहन्ना 1:14 कहता है कि ''वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया।'' मरियम (एक मनुष्य) ने पवित्र आत्मा (परमेश्वर) के माध्यम के द्वारा आश्चर्यकर्म से एक बच्चे को गर्भ में पाया, जो एक ही समय में यीशु के ईश्वरीय और मनुष्य होने का वर्णन है (देखें फिलिप्पियों 2:6, 7)। वह केवल ''दाऊद का पुत्र'' ही नहीं बल्कि ''परमेश्वर का पुत्र'' भी है। वह ''इम्मानुएल'' अर्थात ''परमेश्वर हमारे साथ'' है।

कुंवारी से जन्म को यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्ग में ऊपर उठाए जाने के द्वारा पूरा किया जाता है। यीशु, जिस प्रकार आश्चर्यकर्म के द्वारा इस संसार में आया वैसे ही वह इसमें से गया भी। अपनी मृत्यु के बाद, तीसरे दिन वह जी उठा। एक सामर्थपूर्ण कार्य जो उसके ईश्वरीय होने की पुष्टि करता है (रोमियों 1:4)। अपने आपको चालीस दिन तक गवाहों को दिखाने के बाद

यीशु स्वर्ग में पिता के पास लौटने के लिए ऊपर चढ़ गया (लूका 24:51; प्रेरितों 1:9-11)।

कुंआरी से जन्म से इनकार करने का अर्थ पवित्र शास्त्र के परमेश्वर की प्रेरणा से होने और आरम्भिक कलीसिया की गवाही से इनकार करना है। यह बात मरियम को एक व्यभिचारिणी और यीशु को अवैध सन्तान बना देगी। इसके अलावा यह यीशु को एक झूठा और छलिया भी बना देगी। कुंवारी से जन्म को नकारने का अर्थ यीशु की ईश्वरीयता और उद्धार की उसकी सामर्थ को नकारना है।

डेविड स्टिवर्ट

यूसुफ (1:18-25)

बाइबली रिकॉर्ड हमें यूसुफ के बारे में अधिक नहीं बताता। हम जानते हैं कि वह दाऊद की सन्तान था (1:16, 20) जो नासरत में रहता था (लूका 2:4)। मरियम के साथ उसकी मंगनी हुई थी (लूका 1:27) और उसे स्वर्गदूत के द्वारा बताया गया था कि उसका गर्भवती होना परमेश्वर की योजना के अनुसार है (1:18-21)। यूसुफ एक धर्मी और दयालु आदमी था, जो परमेश्वर के वचन को मानता था (1:19, 24, 25; 2:14, 21, 22)। मसीह के जन्म के बाद वह नासरत में रहा और बढ़ई का काम करता था (13:55)। बारह वर्ष का होने पर यीशु यरूशलेम में अपने परिवार के साथ गया था और उसने अपनी समझ को दिखाया। परिवार उसके बाद नासरत में लौट आया और यूसुफ यीशु के सांसारिक पिता के रूप में काम करता रहा (लूका 2:41-52)। इस समय के बाद उसके बारे में हम कुछ नहीं जानते, इसके सिवाय कि उसके और मरियम के कम से कम छह और बच्चे थे (13:55, 56) हमें और कुछ नहीं मालूम। यह स्पष्ट लगता है कि मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय वह मर चुका था (यूहन्ना 19:25-27)।

दो खाली स्थान (1:18-25)

यीशु की कहानी का एक और पहलू है। बहुत से लोग बच्चा चाहते हैं, पर आदमी नहीं। वे बालक यीशु के जन्म के दिन को मनाएंगे पर राजा और प्रभु के रूप में उसे ठुकरा देंगे (प्रेरितों 2:14-47)।

साल भर में दो खाली स्थानों का महत्व रहता है: खाली चरनी और खाली कब्र। यीशु चरनी में नहीं रहा। वह बड़ा हो गया और उसने सिद्ध अर्थात निष्पाप जीवन जीया। उसने सिखाने और चंगाई देने की सेवकाई की। अन्त में बलिदान के रूप में वह क्रूस पर मर गया ताकि हमें अपने पापों के लिए क्षमा मिल सके। न ही यीशु कब्र में रहा। वह जी उठा, इस कारण उसके जन्म, जीवन और मृत्यु का कुछ अर्थ है। संसार में चाहे यीशु को हर कोई न चाहे पर उसकी आवश्यकता पूरी तरह से है (मरकुस 16:15, 16; यूहन्ना 3:16-21; 7:7; 15:18, 19)।

टिप्पणियां

[1]देखें लूका 1:26-56; 2:1-52; 8:19-21; यूहन्ना 2:1-11; 19:25-27. [2]मिशनाह *केतूबोथ* 1.2; 4.2. मिशनाह ईस्वी 200 के लगभग पूर्ण हुई व्यवस्था के सम्बन्ध में यहूदी मौखिक परम्पराओं का मेल है। [3]1.20 में, NASB में ''अपनी पत्नी के रूप में मरियम को लो'' वाक्यांश में ''के रूप में '' शब्द डाला गया है। मूल में

इसका और अक्षरश: अनुवाद ''मरियम को अपनी पत्नी ले'' हो सकता है (देखें NKJV)। [4]मिशनाह *क्विदुशिन* 4.9. [5]मिशनाह *गितिन* 6.7; 9.4. [6]वही, 9.3. [7]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 1–13,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33ए (डलास: वर्ड बुक्स, 1993), 18. रब्बियों की परम्परा में बेवफ़ाई के मामलों में तलाक की मांग की जाती प्रतीत होती है। (मिशनाह *येबामोथ* 2.8; *सोतह* 5.1.) [8]राबर्ट एच. गुंडरी, *मैथ्यू: ए कमैंट्री ऑन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 21. [9]डी. ए. कारसन, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू जॉन,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1991), 335. [10]वही, 591.

[11]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू,* इंटरप्रिटेशन (लुईसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 9. [12]वही। [13]हेग्नर, 18. [14]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 10. [15]*डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एंड द गॉस्पल्स,* संपा. जोएल बी. ग्रीन एंड स्कॉट मैक्नाइट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1992), 62 में बेन विदरिंग्टन तृतीय, ''बर्थ ऑफ़ जीज़स।'' [16]हैग्नर, 17. [17]डेविड हिल, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 78. [18]वही। देखें यशायाह 11:2; 42:1; योएल 2:28. [19]प्रवक्ता ग्रंथ 46:1 (NRSV)। [20]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 29.

[21]यशायाह 7:14 के और अध्ययन के लिए, देखें एच. सी. ल्यूपोल्ड, *एक्सोपिज़िशन ऑफ़ आइज़ियाह* (ग्रैंड रैपिड्, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1968), 1:155–59. [22]माउंस, 10–11. [23]विदरिंग्टन, 62. [24]परन्तु अफवाएं फैली होंगी। यहूदियों द्वारा कही गई हरेक बात (''हम व्यभिचार से नहीं जन्मे''; यूहन्ना 8:41) को कई विद्वानों द्वारा इस तथ्य में छुरा घोपना माना गया है कि यीशु की माता विवाह से पूर्व गर्भवती थी। बाद में अविश्वासी यहूदियों ने यह दावा करते हुए कि यीशु मरियम की ''अवैध सन्तान'' था मसीहियत पर हमले किए। (ओरिगन *अगेंस्ट सेल्सस* 1.28.) [25]मरियम से सम्बन्धित शिक्षाओं पर और जानकारी के लिए, *द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:268–73 में देखें ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले, ''मेरी।''

यीशु का जन्म कब हुआ था? (1:18-25)

यीशु के जन्म की तिथि हेरोदेस महान के शासन के सम्बन्ध में लगभग हो सकती है (37-4 ई.पू.)। ऐतिहासिक रूप में हम जानते हैं कि हेरोदेस की मृत्यु 4 ई.पू. के अप्रैल माह में हुई थी। इस तथ्य के आधार पर कि हेरोदेस ने यीशु को मरवाना चाहा स्पष्टतया उसकी आयु लगभग 2 वर्ष आंकी गई (2:16)। बहुत सम्भावना है कि यीशु का जन्म 5 ई.पू. में हुआ। इस तिथि पर उलझन उस ज़माने में समय की गणना के कारण हुई। इसका सम्बन्ध डायोनिसियुस एक्सिज्युस नामक एक कैथोलिक भिक्षु[1] द्वारा की गई गलत गणना से भी है जो छठी शताब्दी में मसीह की जन्म की तिथि निर्धारित करने की कोशिश करने लगा। उसके पास सही गणना के लिए आवश्यक सभी दस्तावेज नहीं थे।

मसीह के जन्म के दिवस के रूप में दिसंबर 25 को मनाना लिबेरियुस नाक एक रोमन कैथोलिक बिशप के आदेश के कारण 360 ईस्वी में आरम्भ हुआ।[2] उस समय से पहले यीशु के जन्म के स्मरण के लिए 20 मार्च या अप्रैल 18 को मनाया जाता था। दिसंबर 25 की पसन्द कलीसिया के विभिन्न धड़ों के बीच एक समझौता था। इसका चयन सम्भवतया सैटरनेलिया और ब्रुमेलिया के रोमी पर्वों के कारण हुआ जो अन्धकार के ऊपर ज्योति की अपनी विजय के साथ ''नया सूर्य'' या मकर-संक्रांति को मनाते थे।[3] मसीह का जन्म 379 में कॉन्सटेंटिनावल में और 380 में अन्ताकिया में मनाया गया। ओरिगन (लगभग 185-254) ने मसीह के जन्म दिन को मनाने के विचार को यह कहते हुए नकार दिया:

> केवल पापी लोग इस प्रकार के जन्म दिन पर आनन्द करते हैं। क्योंकि वे सचमुच में पुराने नियम में मिस्र के राजा फिरौन में एक पर्व के साथ अपने जन्म के दिन को मनाने [उत्पत्ति 40:20] और नये नियम में हेरोदेस को देखते हैं [मत्ती 6:21]।[4]

चाहे हम पक्का नहीं जान सकते कि यीशु का जन्म कब हुआ, हो सकता है कि वह दिसंबर में नहीं बल्कि सितंबर में जन्मा हो। क्यों? यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में हमारे ज्ञान के कारण। यूहन्ना जकर्याह नाम एक याजक और उसकी पत्नी इलीशिबा का पुत्र था, जो यीशु की माता मरियम की रिश्तेदार थी। यूहन्ना यीशु से छह महीने पहले पैदा हुआ (लूका 1:36)। जकर्याह के पास स्वर्गदूत की घोषणा किए जाने के समय, वह मन्दिर में अपनी बारी से सेवा कर रहा था। वह अबिया के दल का था (लूका 1:5) जो राजा दाऊद द्वारा ठहराया आठवां दल था (देखें 1 इतिहास 24:5-10)।

मसीह के जन्म पर एक और हवाला लूका में मिलता है: ''उन दिनों में अगस्तुस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएं। यह पहली नाम लिखाई उस समय हुई, जब क्विरिनियुस सूरिया का हाकिम था'' (लूका 2:1, 2)। ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार, अगस्तुस कैसर ने 28 ई.पू. में एक और 8 ई.पू. और 14 ईस्वी में अन्यों ने जनगणना के आदेश दिए। स्पष्टतया इनमें केवल रोमी नागरिक ही थे। हेरोदेस के शासन के अनुसार राज्य तकनीकी तौर पर रोमी इलाका नहीं था, परन्तु केवल रोम के साथ उसकी संधि थी, हेरोदेस ने

अपनी स्वतन्त्रा को दिखाने के लिए अपनी जनगणना में दो साल की देरी की थी। यह उसकी विशेषता हो सकती है। सीरिया के हाकिम के रूप में क्विरिनियुस द्वारा की गई एकमात्र ज्ञात जनगणना 6 ईस्वी या हेरोदेस महान की मृत्यु के लगभग के एक दशक के बाद हुई। परन्तु इस जनगणना के लिए लूका के हवाले का कहीं और उसकी ऐतिहासिक यर्थातता के आधार पर बचाव किया जा सकता है। इसके अलावा चाहे यह पता है कि ईस्वी 6 और 7 में क्विरिनियुस ने सीरिया के हाकिम के रूप में काम किया, रोम के लेटरन अजायब घर में एक खण्डित शिलालेख से इस समय के 10 ई.पू. से पहले होने का संकेत मिल सकता है। वास्तव में कुछ रुकावटों के साथ कुरिनियुस 12 ई.पू. से 16 ईस्वी तक कुछ क्षमता में सीरिया का हाकिम रहा होगा।[5] तो यहां दी गई जनगणना का आदेश 8 ई.पू. में अगस्तुस द्वारा दिया होगा। इसके अलावा नाइजेल टर्नर ने लिखा है कि लूका के वचन का सही अनुवाद होने पर यह समस्या सुलझ जाती है। उसने इसका अनुवाद इस प्रकार से किया: ''यह जनगणना उस जनगणना से *पहले थी* जब कुरेनियुस हाकिम था।''[6] परन्तु उसके विचार पर व्यापक रूप में विवाद है।

टिप्पणियां

[1]सेमुएल मैक्यूली जैकसन, संपा., *द न्यू शैफ-हरज़ोग इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजियस नालेज* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 3:441 में हैंस एकेलिस, ''डायोनिसयुस एक्सिज्यूस।'' [2]फिलिप सैफ, *हिस्ट्री ऑफ द क्रिश्चियन चर्च,* अंक 3, *नाइसीन एंड पोस्ट-नाइसीन क्रिश्चियनिटी* (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1916), 395. [3]सेमुएल मैक्यूली जैकसन, संस्क., *द न्यू शैफ-हरजोग इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजियस नालेज* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 3:48 में एल्बर्ट हेनरी न्यूमैन, ''क्रिसमस।'' [4]ओरिगन हेमिलीस लैविटिकुस 8.3. [5]फ्रेडरिक डब्ल्यू. डेंकर, *जीज़स एंड द न्यू एज: ए कमैंट्री ऑन सेंट लूक'स गॉस्पल,* संशोधन व विस्तार (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस प्रैस, 1988), 23 में कुरिनियुस के कैरियर पर चर्चा की गई। [6]जेफरी एल. शेलर, ''द फर्स्ट नोयल,'' *यू.एस. न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट* (21 दिसंबर 1992): 84.